ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 20
आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
21 जुलाई से 5 अगस्त 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी
डॉ. सुधीर आर्य
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति
श्री अर्जुन देव चड्ढा
श्रीमती अरूणा सतीजा
श्री सत्यपाल आर्य
श्री बृजेन्द्र देव आर्य

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- **0141-2621879**
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

अश्वारोही बनो !

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मि: सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेता:।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चित: तस्य चक्रा भुवनानि विश्वास।।

ऋषि: - **भृगु:** ।। देवता- **काल:**।। छन्द - **त्रिष्टुप्**।।

विनय- कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं (सब जगतों में सात लोक, सात भूमियाँ हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं)। ये ही सात रस्सियाँ (रश्मियाँ) हैं जिनसे कि यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएँ चक्र की तरह घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों के, उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के असंख्यात अक्षों (व्यक्ति-केन्द्रों) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन-चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस तरह यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है! हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्य वर्षों की आयुवाले बहुत से सौर मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व-ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम हैं। भाइयों! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होने वाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दीख रहा है? पर याद रखो कि इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले सकते हैं जोकि ज्ञानी हैं- जोकि समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जोकि क्रान्तदर्शी हैं, जोकि विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं। जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान-प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टिवाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले हैं, वे तो कालरथ पर नहीं चढ़ सकते और न चढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर-उधर दूर जा पड़ते हैं ओर मार्ग-भ्रष्ट हो जाते हैं, या इसके नीचे यूँ ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुँच सकते हैं, अत: आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपने पल-पल, क्षण-क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशिक्त को कभी भी गँवाएँ नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊँची-विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्तव्य निश्चय किया करें।

शब्दार्थ- सप्तरश्मि:= सात रस्सियोंवाला **सहस्त्राक्ष:**= हजारों धुरों को चलाने वाला **अजर:**= कभी भी जीर्ण, बुड्ढा न होने वाला **भूरिरेता:**= महाबली **काल: अश्व:**= समयरूपी घोड़ा **वहति**= चल रहा है- संसार- रथ को खींच रहा है। **विश्वा भुवनानि**= सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन **तस्य**= उसके **चक्रा:**= चक्र हैं-उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। **तम्**= उस घोड़े पर **विपश्चित:**= ज्ञानी और **कवय:**= कान्तदर्शी लोग ही **आरोहन्ति**= सवार होते हैं।

आत्मा शुचिता के परिणाम ही शौच धर्म है, उसकी प्राप्ति आत्म संतुष्टि के बिना असंभव ही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अंतरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अंतरंग सभा की बैठक *दिनांक 9 अगस्त 2013, शुक्रवार को दोप. 1 बजे आर्य समाज- स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर* में रखी गई है। इसी अवसर पर अलवर जिले की समस्त आर्य समाजों, जिला सभा एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं द्वारा नव निर्वाचित आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की समस्त कार्यकारिणी का अभिनन्दन किया जावेगा।

अत: आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी, अंतरंग सदस्यों, विशेष आमंत्रित सदस्यों एवं आर्यो समाजों के विशिष्ट गणमान्य कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि बैठक में समय पर पधारने का कष्ट करे।

कार्यक्रम-

* 1 बजे से 3 बजे तक - आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अंतरंग सभा की बैठक
* 3 बजे से 4 बजे तक-यज्ञ
* 4 बजे से 6 बजे तक श्री विद्यासागर जी शास्त्री भू.पू. प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को 'आर्य शिरोमणि उपाधि' से विभूषित करना एवं नवनिर्वाचित प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का अभिनन्दन।

बैठक में विचारणीय विषय-

* पिछली कार्यवाही की पुष्टि।
* नव सत्र 2013-14 का बजट पेश करना।
* प्रतिनिधि सभा के भवन की मरम्मत एवं छत के कार्य की प्रगति।
* अर्थ संचय समिति का निर्माण।
* आर्य समाजों को संगठित एवं क्रियाशील बनाने की योजना।
* नयी कमेटियों का निर्माण।
* वैदिक प्रचार कार्य को तीव्र गति से किये जाने पर विचार।
* अन्य विषय प्रधान जी की स्वीकृति से।

स्वागत समिति-

जगदीश प्रसाद गुप्ता, जगदीश जी आर्य-जखराना, अशोक आर्य, प्रदीप आर्य, हरिपाल शास्त्री, श्रीमती कमला शर्मा, माता मोहन देवी, विनोदीलाल दीक्षित, कृष्णलाल अदलखा, कै. रघुनाथ सिंह, शिवाजी नेहरा, प्रद्युमन गर्ग, सुरेश दर्गन, रमेश चुघ, बृजेन्द्रदेव आर्य, धर्मवीर आर्य, बी.डी. चौधरी, शिव कुमार कौशिक, धर्मसिंह आर्य, रामनारायण सैनी, सुनिल आर्य, ओमप्रकाश तनेजा, धर्मपाल आर्य, सुरेन्द्र सक्सेना, सत्यपाल आर्य, हरीश चन्द गुप्ता, विनोद भण्डारी, रविन्द्र सचदेवा, राजपाल यादव, रजनी गोयल, रघुवीर आर्य ।

- निवेदक अमर मुनि, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर (राजस्थान) के सम्माननीय पदाधिकारियों एवं सदस्य गणों को सादर सूचित किया जाता है कि आर्य उप प्रतिनिधि सभा (जिला कार्यकारिणी), अलवर की कार्यकारिणी की एक आवश्यक बैठक दिनांक 09 अगस्त 2013 को प्रात: 10 बजे से 'आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर' में आयोजित की जावेगी, जिसमें आप सभी की समय पर उपस्थिति अति आवश्यक है।

बैठक का एजेण्डा निम्न प्रकार है-

* जिला कार्यकारिणी द्वारा नवनिर्वाचित आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की कार्यकारिणी का अभिनन्दन करना।
* जिले में वैदिक संस्कृति के प्रचार व प्रसार पर विचार।
* जिले की सुप्त आर्य समाजों को सक्रिय करने पर विचार।
* युवा वर्ग को आर्य समाज की विचारधारा से जोड़ने पर विचार।
* वार्षिक बजट बनाने पर विचार।
* अन्य विचार अध्यक्ष जी की अनुमति से।

धर्मवीर आर्य, संयुक्त मंत्री

भजन उपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह जी का अलवर जिले में वेद प्रचार कार्यक्रम

14,15,16 जुलाई 2013 अलवर शहर की तीनों समाजों में
17,18 जुलाई 2013 रामगढ़ व गोविन्दगढ़
19,20,21 जुलाई 2013 - राजगढ़ व बांदीकुई
24-25 जुलाई 2013- किशनगढ़ बास
25 से 30 जुलाई 2013- तिजारा, इसरोदा, टपूकड़ा, बूढ़ीबावल, नसोंपुर
1, 2 अगस्त 2013- खैरथल
3, 4 अगस्त 2013- हरसौली, रसगण
5 अगस्त 2013- मुण्डावर 6 अगस्त 2013- चाँदपुर
7 अगस्त 2013- तिनकीरूढि 9 अगस्त 2013- खानपुर अहीर
10 अगस्त 2013- दरबारपुर 11 अगस्त 2013- सियाखोह
12 से 16 अगस्त-जखराणा, गुआणा,जटगांवडा, नायराणा, डूंगरोली, गण्डाला, मिलखपुर, गादोज

-अमर मुनि

उत्तम शौच धर्म के बिना आत्मा की शुद्धि असंभव है, कपड़े में लगे मल को दूर करने के लिए जल की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा की पवित्रता के लिए शुचि परिणाम/ पर वस्तुओं के प्रति अनासक्त भाव रूपी जल अनिवार्य है।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर से दो सौ मरीजों को लाभ

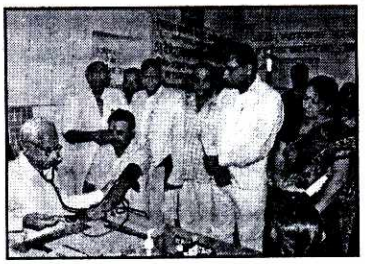

अलवर। आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग की ओर से जन सहयोग एवं बाबा ठाकरदास कलाकंद वाले की स्मृति में रविवार को छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल में निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर लगाया गया। जिसमें करीब दो सौ मरीजों ने पंजीयन कराकर जाँच कराई और डाक्टरों से परामर्श लिया। समिति के प्रधान प्रदीप आर्य ने बताया कि शिविर सुबह 9.30 से दोपहर 12 बजे तक आयोजित किया गया। जिसमें एचबी, ब्लड़ प्रेशर, ब्लड़ शूगर सहित कई जाँच निःशुल्क की गई तथा कई प्रमुख लिपिड़ प्रोफाइल, थायराइड, लिवर फंक्शन सहित कई जाँचे रियायती दरों पर कराई गई। शिविर में डाक्टर देशबंधु गुप्ता ने 40, नेत्र विशेषज्ञ गोपाल गुप्ता ने 35, डाक्टर बी.एल.सैनी, डॉक्टर डी.सी. शर्मा एवं अंजू गुप्ता ने करीब दो सौ मरीजों की जाँच की गई। सौजन्य से- अरूण प्रभा 15 जुलाई 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली

'जाति के बंधनों से ऊपर उठकर बढें आगे'

पांचवां आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का यह प्रयास था कि देश में आर्य विचारधारा की स्थापना हो तथा आर्य जाति एकता के सूत्र में बंधे। जिसमें 'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्' का वैदिक लक्ष्य पूरा किया जा सके। इसी कम में जातिवाद के बंधनों को तोडकर गुणकर्म और स्वभाव के मेल के अनुसार विवाह संबंध निर्धारित करने के लिए विगत वर्षों में चार आर्य युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इसी कम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पांचवे आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन दिनांक 14 जुलाई 2013 रविवार को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट– 2 नई दिल्ली में किया गया।

आर्य परिवारों को परस्पर जोडने के लिए इस सार्थक उपकम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्री अर्जुनदेव चढ्डा के इस प्रकार के आयोजन के पूर्व अनुभव को देखते हुए उन्हें युवक युवती परिचय सम्मेलन का राष्ट्रीय संयोजक नियुक्त किया गया था। राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चढ्डा ने बताया कि विगत चार सम्मेलन में पूर्व में आयोजित किए जा चुके हैं। जिनके माध्यम से 238 युवक युवतियां आपस में वैवाहिक बंधन में बंध चुके हैं।

कार्यकम का शुभारंभ अतिथियों श्री विद्यामित्र ठकराल, श्री अजय सहगल, श्री विनय आर्य, श्री अर्जुनदेव चढ्डा, श्री प्रियवत आर्य के द्वारा दीप प्रज्जवलन व ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों के उच्चारण के साथ हुआ। अतिथियों के द्वारा इस अवसर पर प्रकाशित आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक– युवतियों के परिचय से युक्त विवरणिका पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि यहां उपस्थित सभी युवक तथा युवतियां और उनके अभिभावक जाति के बंधन को भुलाकर केवल आर्य समाज के विकास में आगे बढें और योग्य वर तथा वधु का चयन करें।

कार्यकम में महिला संयोजिका दिल्ली श्रीमती विभा आर्या ने आव्हान किया कि आज यहां उपस्थित सभी बहनें और भाई यह संकल्प लें कि जाति के बंधन तोडकर और दहेज न लेने वाले से ही विवाह करेंगे। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा गुजरात के ट्रस्टी अजय सहगल ने कहा कि समान विचारधारा वाले युवक युवतियों का यह वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्य समाज की नई पीढी के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

इस अवसर पर बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान गंगाप्रसाद आर्य ने कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का यह अभिनव प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है। जिसके कुछ समय बाद भविष्य में दूरगामी परिणाम आएंगे। इस प्रकार के आयोजन प्रांतीय स्तर पर तथा अन्य महानगरों में भी किए जाने चाहिए। जिससे क्षेत्रीय लोगों को अधिक से अधिक संख्या में जोडा जा सके। प्रधान प्रियव्रत आर्य व मंत्री एसडी नांगिया ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमारे आर्य समाज में इस प्रकार का आर्य परिवारों को जोडने का भव्य आयोजन हुआ। हम सार्वदेशिक सभा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का आभारी हैं। इस अवसर पर राजीव आर्य महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री धर्मपाल आर्य वरिष्ठ उप प्रधान दिल्ली आर्य प्रधान, मंत्री सुरेशचन्द्र आर्य, सुख्याबीर सिंह आर्य तथा आर्य विद्वान डॉ. देव शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।

आर्य परिवारों के इस वैवाहिक परिचय सम्मेलन के सूत्रधार श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने बताया कि कार्यकम में अधिक से अधिक संख्या में युवक युवतियों को सम्मिलित करने के उद्देश्य से विभिन्न राज्यों में प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली के श्री गोविन्द नागपाल, गुजरात के श्री सुरेशचन्द्र आर्य अहमदाबाद, राजस्थान के श्री अमर मुनि जी, उत्तरप्रदेश के श्री अशोक आर्य, आन्ध्रप्रदेश के श्री धर्म तेजा हैदराबाद, छत्तीगढ के श्री दीनानाथ वर्मा, महाराष्ट्र के डॉ. ब्रह्ममुनि जी, उत्तराखण्ड के श्री विनय विद्यालंकार, विदर्भ के श्री कष्णकुमार शास्त्री, जम्मू कश्मीर के श्री राकेश चौहान, हरियाणा के श्री कन्हैयालाल आर्य, हिमाचल प्रदेश के श्री श्री रामफल आर्य, उडीसा के श्री स्वामी सुधानन्द जी, असम के श्री लोकेश आर्य तथा पंजाब के श्री दिनेश शर्मा को क्षेत्रीय संयोजक बनाया गया था। साथ ही श्रीमती वीना आर्य, श्रीमती रश्मि वर्मा, श्रीमती विभा आर्य को महिला संयोजक नियुक्त किया गया। इसके अलावा जिला स्तर पर भी जिला संयोजक बनाए गए।

पर वस्तु को प्राप्त करने का भाव ही लोभ है, स्वद्रव्य में सदैव लीनता का सम्यक् पुरुषार्थ ही शौच धर्म है।

श्री विनय आर्य ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न प्रकार के काऊण्टर लगाए गए थे। जिनमें पूछताछ, तत्काल पंजीयन, स्मारिका वितरण, बैच वितरण, सामान्य व्यवस्था, सुझाव एवं सुधार आदि स्टॉलोंको श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती वीना आर्या के नेतष्त्व में उनकी टीम जिसमें श्रीमती सुधा आर्या, शालिनी आर्या, पुष्पा महावर, सुश्री हविशा आर्या ने बखूबी संभाल रही थी। श्रीमती विभा आर्या ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर विशेष रुप से तत्काल पंजीयन की व्यवस्था की गई थी। जिसमें 19 युवक व 15 युवतियां कुल 34 ने तत्काल पंजीयन कराया।

दिल्ली प्रदेश के संयोजक श्री गोविंद लाल नागपाल ने बताया कि कार्यक्रम से पूर्व 68 युवक व 66 युवतियों का पंजीयन किया गया था। पंजीकष्त आर्य युवक युवतियों के बायोडेटा मय मय फोटो की एक पुस्तिका प्रकाशित की गई थी। प्लास्टिक कवर में विवरिणका पुस्तक के साथ वर्तमान में आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन की आवश्यकता, आर्य समाज और अन्तर्जातीय विवाह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नेत्रदान जागरुकता, रक्तदान जागरूकता, कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता, वष्क्षारोपण तथा वनों का महत्व, जल बचाओ– कल बचाओ इत्यादि सामाजिक चेतना से संबंधित विषयों की मुद्रित सामग्री रखी गई।

सम्मेलन के आरंभ में सभी पंजीकष्त प्रत्याशियों तथा उनके अभिभावकों को अलग अलग रंग में उनके कमांक सहित बैच लगाए गए ताकि विवरिणका के अनुसार युवक युवती प्रत्याशी की पहचान की जा सके। कार्यक्रम में उपस्थित युवक तथा युवतियों ने मंच पर आकर आत्मविश्वासपूर्वक अपना परिचय दिया। उपस्थित सभी ने तालियां बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया। कुछ अभिभावकों ने भी अपने विवाह योग्य पुत्र– पुत्रियों का परिचय मंच पर दिया। जिसे कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावकों तथा युवक युवतियां ने गंभीरतापूर्वक सुना तथा अपनी पुस्तिका में नोट भी किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री विनय आर्य, श्री अर्जुनदेव चढ्डा, श्री गोविन्द लाल नागपाल के द्वारा किया गया। श्री धर्मपाल ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलन सम्पूर्ण देश में विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए जाने चाहिए, क्योंकि इससे एक छत के नीचे एक समान विचार वाले लोगों के रिश्ते देखने, जानने तथा पहचानने को मिलते हैं। कार्यक्रम में आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट– 2 द्वारा आगन्तुकों के लिए निवास, चाय नाश्ता तथा भोजन की व्यवस्था की गई। आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन में अपना सकिय सहयोग देने वालों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्मष्ति चिन्ह प्रदान कर अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। अर्जुनदेव चढ्डा ने बताया कि कार्यक्रम स्थल पर 23 परिवारों ने आपस में मिलकर बातचीत कर रिश्ते की बात को आगे बढाया।

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चढ्डा ने आगन्तुक अतिथियों कार्यकर्ताओं का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सामाजिक समानता पर आधारित एक जाति विहीन समाज की स्थापना में आर्य समाज के ये सम्मेलन मील का पत्थर साबित होंगे। उन्होंने उपस्थित युवक– युवतियों एवं अभिभावकों का इस कार्यक्रम में शामिल होने पर धन्यवाद ज्ञापित किया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रियवत आर्य प्रधान आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट– 2, मंत्री एसडी नांगिया, कोषाध्यक्ष एसके कोहली, श्री कंवर भान खेत्रपाल, श्री आशीष गुप्ता, रामप्रसाद याज्ञिक कोटा, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री कोटा का भी सहयोग रहा।

अर्जुनदेव चढ्डा, राष्ट्रीय संयोजक

अपराधी नेताओ पर नकेल

देश की सर्वोच्च न्यायालय ने अपराधी नेताओं पर नकेल डालने की दिशा में लौहपुरुष जैसा जो कड़ा व सार्थक कदम उठाया है, वह बहुत-बहुत प्रशसंनीय व स्वागत योग्य है। देश में आजादी के बाद पहली बार राजनीति में बढ़ते अपराधियों से मुक्ति पाने की दिशा में सुप्रीम कोर्ट ने जो बड़ी पहल की है, उसे राजनीति का शुद्धीकरण होने का अब वाकई मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। अभी तक राजनीति में पनपते अपराधियों पर कोई लगाम नहीं थी लेकिन अब जिन दागी, भ्रष्ट, चरित्रहीन, नेताओं को किसी भी अदालत से किसी भी तरह के मामले में यदि दो साल अथवा इससे अधिक सजा मिलती है, तब वह उसी दिन से सांसद व विधायक पद की कुर्सी से अलग यानी पद विहीन हो जाएगा। अच्छी बात यह भी है यह साहसिक फैसला जिस दिन विद्वान न्यायाधिपतियों ए.के. पटनायक और एस.जे. मुखोपाध्याय ने सुनाया, वह उसी दिन से पूरे देश में लागू हो गया है।

सुप्रीम कोर्ट ने इसके अलावा पुलिस हिरासत या जेल में रहने वाले नेताओं द्वारा चुनाव लड़ने पर भी रोक लगाकर अच्छा कदम उठाया है। यह बात जग जाहिर है कि अभी तक अनेक नेता जिन्हें निचली अदालतों द्वारा 2 साल व उससे अधिक सजा दी जा चुकी है, वे उससे बड़ी अदालत में अपील करने के बाद उस पर फैसला न आने तक अपने सांसद/विधायक पद पर बने रहते आए हैं। उधर, वे नेता जो पुलिस हिरासत या न्यायिक हिरासत में है, वे अभी तक जेल में बैठे-बैठे भी चुनाव लड़ते रहे है परन्तु सुप्रीम कोर्ट ने अब उनका यह अधिकार भी खत्म करके अच्छा कदम उठाया है। अफसोस की बात यह है कि जो काम देश की संसद को खुद राजनीति से पनप रहे अपराधियों पर नकेल डालने की करनी चाहिए थी, वह सुप्रीम कोर्ट को मजबूरन तब करनी पड़ी है, जब उसने तमाम राजनीतिक दलों की 'नियत' को वाकई भांप लिया। कटु सच यह है कि कोई भी राजनैतिक दल इस मामले में ईमानदार नजर नहीं आया। हालांकि बातें बहुत बड़ी-बड़ी लम्बे समय से की जाती रही परन्तु हकीकत में राजनीति को गंदा करने वाले अपराधियों पर कभी कोई शिकंजा कसने की धरातल वाली भूमिका नजर नहीं आई।

यह कौन नहीं जानता कि राजनीति मे अपराध किस तेजी से पनप रहे है। अकेले देश की संसद में ही 162 सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले चल रहे हैं। शर्म की बात यह है कि 76 सांसदों पर तो हत्या व बलात्कार जैसे संगीन आरोप है, मगर वे फिर भी सांसद बने बैठे हैं। इसी तरह देश की विभिन्न विधान सभाओं में 1258 विधायकों के विरूद्ध आपराधिक केस विचाराधीन है और वे सब विधान सभाओं में काबिज है। अब सुप्रीम कोर्ट के इस नए क्रांतिकारी फैसले से दागी व भ्रष्ट नेताओं को घर बैठाने की राह आसान हो सकेगी। अभी तक वे कुर्सी से चिपके बने रहकर लोकतंत्र की जड़ों को खोखला व मान-मर्यादाओं को कलंकित कर रहे थे। सुप्रीम कोर्ट ने राजनीति में बढ़ती गंदगी की सफाई के लिए खुद आगे आकर जो पहल की है, उससे अब यह उम्मीद बनी है कि सफेदपोश व प्रभावशाली किस्म के नेता अपराधियों की छंटनी हो पाएगी। इससे लोकतंत्र में निखार आ पाएगा।

- ओम प्रकाश, संपादक राजस्थान टाइम्स

तन की पवित्रता से चेतना की पवित्रता नहीं होती किन्तु चेतन की पवित्रता से तन भी पवित्र हो जाता है। जो जल तन को ही पवित्र नहीं कर सकता वह मन व चेतन को कैसे पवित्र करेगा?

आत्म- निरूपण

स्व. डॉ. जयदेव वेदालंकार

भौतिकवादी मत- उपनिषदों में जीवात्मा के विषय में यथार्थवादी दृष्टिकोण उपलब्ध है। जैसे ब्रह्म के विषय में प्रत्ययवादी विचारधारा अनेक दार्शनिक सम्प्रदायों की मिलती है। इसी प्रकार जीवात्मा के विषय में भी अनेक मत पाये जाते हैं। दयानन्द को आत्मा के विषय में भी ब्रह्म की तरह यथार्थवादी मान्यता है परन्तु भारतीय चिन्तन में भी आत्मा के सम्बन्ध में यह कहा गया है कि चेतन आत्मा के मानने की क्या आवश्यकता है। जैसे शरीर में इन्द्रिय जड़ हैं इसी प्रकार आत्मा भी जड़ है। अंतर केवल इतना है कि शरीर और इन्द्रियां उस जड़ तत्व के स्थूल अंश हैं और जीवात्मा उसी जड़तत्व का सूक्ष्मतम अंश है। यह विचारधारा चार्वाक की है। उसका कहना है कि शरीर में जो चेतनता दृष्टिगोचर होती है, वह भौतिक पदार्थो के संघात के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होती है। जैसे शराब के पीने से मादकता उत्पन्न होती है उसी प्रकार चारों महाभूतों (चार्वाक केवल पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) से चैतन्य उत्पन्न हो जाता है। शरीर नष्ट होने पर यह जीव भी नष्ट मानना चाहिए। कहने का अभिप्राय यह हुआ कि इस सिद्धांत के मानने पर शाश्वत नित्य आत्मा का कोई स्थान नहीं है। आधुनिक भौतिकवाद में इस विचारधारा का प्रचलन कुछ परिष्कृत रूप में पाते हैं। उन भूतों का मिश्रण रूप चैतन्य में परिणत हो जाता है। आधुनिक भौतिक चैतन्य का आधार सत्वमूल (जीवन-प्रोटोप्लाज्म) के उपादानभूत पृथक तत्वों (कार्बन ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, स्फुर गंध, लोहा, पोटेशियम, सोडियम आदि में) चैतन्य को न स्वीकार कर उनके मिश्रण में स्वीकार करते हैं। अन्य कुछ भौतिकवादियों का विचार है कि सैल्स से जीवन प्रारंभ होता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने स्थापना की थी कि पदार्थ जड़ को शक्ति (चेतन) में परिवर्तित किया जा सकता है। उस समय के विद्वानों ने इसे कल्पना माना था परन्तु 1910 में लार्ड रदरफोर्ड ने अपने परीक्षणों से यह सिद्ध किया कि अणु का अधिक भाग केवल रिक्त स्थान से निर्मित्त होता है। उसकी परिधि में कुछ गतिशील विद्युत्कण रहते हैं, इनके क्षेत्र को न्यूक्लियस कहा जाता है। अणु की परिधि में यह लगभग इतना ही जितना कि एक मील की परिधि में एक छोटा सा आदमी। न्यूक्लिअस का अर्थ है क्रिया के केन्द्र अथवा उत्पादन या प्रजनन का केन्द्र। यह क्रिया का केन्द्र अणु में, था उत्पादन या प्रजनन का केन्द्र सैल में होने पर कहा जाता है। सैल की रचना अनेकानेक अणुओं से मिलकर होती है। किसी सैल में अणु के गतिशील विद्युतकणों को जिनका नाम न्यूक्लिअस बताया गया है, पाश्चात्य दर्शन के साथ प्राच्य दर्शन की समानता को प्रकट करने वाले कतिपय भारतीय विद्वानों ने तेज नाम दिया है। अभिप्राय: यह है कि इस गतिशील विद्युत् अवस्था का नाम तेज है। अत: इससे यह निष्कर्ष निकाला कि तत्व (जड़ पदार्थ और तेज (चेतन) में कोई अंतर नहीं है। दोनों एक ही वास्तविकता के दो रूप है। आधुनिक वैज्ञानिक भी कुछ अंतर से इसी सिद्धांत को स्वीकार करते हैं।

रूसी महिला का चेतना सम्बन्धी परीक्षण 1857 में रूडाल्फ विर्चो ने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम है सैलुलर पेथालोजी! जहां उसने यह सिद्धांत स्थापित किया है कि जैसे एक दीवार दूसरों से मिलकर बनती है अथवा दीवार की रचना में एक विशेष प्रकार की इकाइयां भाग लेती हैं। ऐसी प्रत्येक इकाई को सैल कहते हैं। उसका यह भी कहना है कि एक सैल की उत्पत्ति किसी पहले विद्यमान सैल से ही होती है। सैल पद यहां चेतना के लक्षण प्रकट करता है। सर्वप्रथम जिस छोटे से छोटे देह में चेतना के लक्षण प्रकट होते हैं उसका नाम सैल है। ऐसे सैल में वह द्रव्य, जिसके कारण जीवन के लक्षण प्रकट होते हैं ''प्रोटोप्लाज्म'' है। विर्चो का यह विचार है कि चेतन सैल अचेतन का परिणाम नहीं, जब वह एक मूल सैल से अन्य सैल की उत्पत्ति बतलाता है। परन्तु ऐजिल्स ने विर्चो की उक्त मान्यता का खण्डन किया है उसने बतलाया कि सैल का उद्भव भौतिक द्रव्य से हो सकता है।

अब प्रश्न यह है कि सैल में चेतनता कहां से आती है। लपेशिन्स्काया ने जो परीक्षण किया था उन चित्रों द्वारा सैल बनने की प्रक्रिया का जो प्रदर्शन किया है उसमें केवल इतनी सफलता प्रमाणित होती है कि जो द्रव्य सैल नहीं है उनसे सैल की रचना होती देखी जा सकती है। प्रश्न यह है कि सैल में चेतनतता कैसे तथा कहां से आई? चेतना के अस्तित्व को प्रकट करने वाले विधायक या विघातक क्रिया रूप लक्षण पहले पहल जहां दिखाई देते हैं वहां चेतना का अस्तित्व जान लिया जाता है परन्तु वे उपादान द्रव्य या उनसे उत्पन्न सैल स्वयं चेतना नहीं है। उपादान द्रव्यों के और पहले के उपादान द्रव्यों के साथ चेतना बैठी रहती है। परन्तु साधनों के अभाव में अभी वहां विघातक था विधायक क्रियाओं का उद्भव नहीं हो पाया। जब उपादान द्रव्य इस अवस्था में आ जाते हैं कि वहां क्रियाओं का उद्भव होने लगे उसे चेतना का अनुमान कर लिया जाता है। ऐसा स्वीकार करने पर यह प्रमाणित हो जाता है कि अचेतन मूल द्रव्यों के साथ, पर उनसे सर्वथा पृथक रूप में चेतना बनी रहती है। इस प्रकार तो अचेतन से अतिरिक्त चेतना का स्वतंत्र अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है।

1. केवल चेतन सत्ता- इस भौतिकवादी विचार धारा के प्रतिक्रिया स्वरूप दूसरी विचारधारा यह है कि (जिसकी पूर्वपक्ष रूप में प्रथम अध्याय में उल्लेख कर चुके हैं। यह दृश्यादृश्य ब्रह्माण्ड केवल एक ही वस्तु का रूप है। दोनों प्रकार के जगत् की मूल सत्ता केवल एक चेतन है। जड़ पदार्थों की कोई सत्ता नहीं है। जो मूल सत्ता एक चेतन है वही ब्रह्म है।

2. जड़ चेतन दोनों का समन्वय- आधुनिक काल के दयानन्दादि दार्शनिक और न्याय और सांख्य आदि की मान्यता यह है कि वस्तुत: जड़ और चेतन दोनों ही मौलिक सत्तायें हैं। किसी भी केवल एक जड़ अथवा चेतन वस्तु के आधार पर जगत् रचना का सामंजस्य नहीं हो पाता है। जड़ से चेतन और चेतन से जड़ बना जाना दोनों ही मान्यताओं को एकांगी कहना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। वास्तव में इन दोनों की सत्ताओं का जो स्वरूप वर्णन किया जाता है वह परस्पर इतना

जहाँ लोभ रूपी सर्प लप–लपा रहे हैं, वहाँ निराकुशलता कहाँ? पर के त्यागे बिना निज की प्राप्ति असंभव ही है। पर वस्तु ग्रहण का भाव उत्तम शौच की हत्या करना है।

विरुद्ध है कि एक वस्तु को दूसरे का परिणाम या विकार अथवा रूपान्तर मानना दोषों से रहित नहीं कहा जा सकता है। सांख्य दर्शन आत्मतत्व को जड़ से भिन्न सिद्ध करते हुए शुद्ध तार्किक सुदृढ़ युक्तियों द्वारा अपनी मान्यता को प्रतिष्ठापित करता है कि प्रकृति से उत्पन्न जड़ पदार्थ शरीरादि (संहत) मिलकर बने हैं। संघात स्वयं अपने लिए नहीं होता है जिस प्रकार शैय्यादि अपने लिए नहीं होते हैं इसलिए पुरुष संघात से भिन्न विकृति से सर्वथा पृथक् सत्ता रखता है। प्रकृति से उत्पन्न जितने पदार्थ हैं, स्वामी नहीं। जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने कन्धों पर स्वयं नहीं बैठ सकता है उसी प्रकार भोग स्वयं अपना भोक्ता नहीं हो सकता, इसलिए पुरुष शरीर का अधिष्ठाता, भोक्ता, प्रकृति से भिन्न है। -क्रमशः अगले अंक में।

वैदिक ज्ञान नई पीढ़ी को कैसे दिया जाए

जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु के गुण-कर्म-स्वभाव को ठीक प्रकार से जान लेता है और उससे होने वाले लाभों, सुपरिणामों तथा प्रभावों से परिचित हो जाता है साथ ही उस वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करता है। इसके विपरीत जो वस्तु दुःखदायी, अनुपयोगी, हानिकारक प्रतीत होती है तो उस वस्तु को ग्रहण नहीं करता है अथवा छोड़ देता है।

यह सिद्धांत विश्व की सभी वस्तुओं पर लागू होता है। विश्व में सर्वाधिक प्राचीन, ईश्वरीय, सत्य, सनातन, शाश्वत, वैज्ञानिक, सार्वजनिक, सार्वभौमिक, सार्वकालिक वैदिक धर्म रहा है। इसके अपनाने से ही व्यक्तिगत जीवन ही नहीं अपितु पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा विश्व के मनुष्यों को सुखशान्ति, संतोष, निर्भीकता, स्वतंत्रता की प्राप्ति संभव है, अन्य किसी उपाय से नहीं लेकिन विगत कुछ वर्षों से इसकी परम्परा का लोप हो जाने के कारण विश्व समाज में सैकड़ों, हजारों प्रकार के मत, पंथ, सम्प्रदाय, गुरुडम, सिद्धांत, मान्यताऐं प्रचलित हो गई है तथा होती जा रही हैं। यह बात प्रामाणिक है कि वैदिक संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, समाज, राजनीति, परम्पराऐं महान हैं, अनुपम हैं किन्तु आज के मानव समाज को इस वैदिक जीवन पद्धति का बोध नहीं हो पा रहा है।

बस हमें इतना ही करना है कि लोगों को बताना है कि वैदिक जीवन पद्धति श्रेष्ठ है, महान् है, पूर्ण है, उपयोगी है। इसके लिए निम्न उपाय करने पड़ेंगे और साधन जुटाने पड़ेंगे।

* आदर्श, त्यागी, तपस्वी, संन्यासी का निर्माण।
* धार्मिक, योगाभ्यासी, वेद, दर्शन, उपनिषद, संस्कृत भाषा, व्याकरण, निरुक्त, साहित्य के निष्णात, प्रगल्भ ब्राह्मणों का निर्माण।
* आर्ष गुरुकुलों का संचालन, सहयोग जिनमें वर्णोच्चारण शिक्षा से लेकर वेद तक अध्ययन, अध्यापन हो।
* शास्त्रज्ञ, बहुभाषाविद्, व्यवहारकुशल, मिलनसार, प्रभावशाली पण्डित, पुरोहितों का निर्माण जो देश-विदेश में प्रचार कर सके।
* वैदिक वाङ्मय, सिद्धांतों, नियमों, विधिविधानों, अनुसंधानों को दर्शाने वाले ग्रंथों का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन तथा निःशुल्क या अत्यल्प मूल्य में बुद्धिजीवी वर्ग में वितरण।
* समय-समय पर योग (ध्यान), यज्ञ, चरित्र निर्माण आदि शिविरों का आयोजन।
* त्रैमासिक मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन जिनमें वैदिक धर्म की बातों का वर्णन हो।
* वैदिक परम्परा को दर्शाने वाले टी.वी. चैनल बेवसाइट का संचालन।
* विविध व्यवसायी वर्गो के लिए वैदिक धर्म से सम्बन्धित गोष्ठियां यथा डॉक्टर, इंजिनियर, पत्रकार, राजनेता, मैनेजर आदि।
* सर्वधर्म सम्मेलनों का आयोजन जिसमें अन्य मत, पंथ वालों को भी वैदिक धर्म की विशेषताओं, श्रेष्ठताओं का परिचय कराया जाए।

वैदिक ज्ञान को नई पीढ़ी में प्रवाहित करने के लिए बाल्यावस्था में शिक्षा का माध्यम एक महत्वपूर्ण साधन है इसके माध्यम से ही हमारी वैदिक ज्ञान की परम्परा वंशानुगत लाखों करोड़ों वर्षो तक चलती रही। बाल्यावस्था में ही बच्चों के विचार वाणी और व्यवहार में वैदिक जीवन पद्धति कूट-कूट कर भर दी जाती थी किन्तु आज वह वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली समाप्त प्रायः हो गयी है। अतः माता-पिता को चाहिए कि वे घर में ही बच्चों के लिए गुरुकुल का वातावरण बनाकर स्वयं गुरु की तरह बच्चों को आदर्श दिनचर्या, व्यायाम, यज्ञ, ध्यान, स्वाध्याय, प्राचीन गौरवमय आदर्श प्रेरणादायक इतिहास आदि बातों को बतायें और उन पर उन सबका महत्व, लाभ, उपयोगिता, आवश्यकता को बताते हुए शिक्षा प्रदान करें। इस प्रकार से संतानों को वैदिक धर्मी बनाने हेतु तन-मन-धन से प्रयास करना चाहिए। हमें संतानों को धन के साथ-साथ धर्म की भी शिक्षा देनी चाहिए और यह वर्तमान में माता-पिता के द्वारा ही संभव है। इसके पश्चात् समाज में आदर्श विद्वान, पण्डित, पुरोहित, संन्यासी, उपदेशक आदि के प्रवचनों में भी बच्चों को ले जाना लाभकारी होता है। इसके साथ यदि घर में उपर्युक्त महानुभावों को उपदेशार्थ आमंत्रित करके यज्ञ, सत्संग आदि के कार्यक्रम रखें जायें तो वे भी नई पीढ़ी में वैदिक परम्परा के संस्कारों को प्रदान करने में बड़े सहयोगी होते हैं।

जिनकी संताने बड़ी हो गई हैं और उनको किन्हीं कारणों से बाल्यावस्था में वैदिक परम्परा का ज्ञान-विज्ञान नहीं मिला है या नहीं दिया गया है अथवा वे जानते हुए भी उत्तम वैदिक परम्परा से विरुद्ध आचरण करते हैं उन्हें अपने उत्तराधिकार से वंचित करके योग्य धार्मिक युवाओं को अथवा धार्मिक संस्थानों को अपनी संतान मानकर उनके नाम संपत्ति कर देनी चाहिए। यह हमारा वैदिक धर्म का शास्त्रीय प्रमाणिक सिद्धांत है। और ऐसा देखा भी गया है कि केवल इतनी धमकी से ही संतान धार्मिक मार्ग पर आ जाती है।

सात्विक भोजन, सादी वेशभूषा, मातृभाषा, गौरवपूर्ण परम्परायें, उत्तम रीति रिवाजों तथा श्रेष्ठ व्यवहारों को स्वयं के जीवन में प्रथम उतारें तत्पश्चात् बच्चों को भी शिक्षा प्रदान करें। बच्चे चाहे किसी भी विभाग में, किसी भी विषय का अध्ययन, प्रशिक्षण क्यों न प्राप्त करता

लोभ एक ऐसी अग्नि है जिसमें आत्मा के समस्त गुणों को भस्म करने की सामर्थ्य है, जिनके पास संयम, तप, समता, ध्यान रूपी जल नहीं वे लोभ रूपी अग्नि में झुलस जायेंगे।

हो उसे वैदिक शाश्वत, अपरिहार्य परम्पराओं को जीवन में चलाने हेतु प्रेरित करें, संकल्प करायें। अज्ञान, आलस्य, प्रमाद, लापरवाही या किसी अन्य कारण से अनिवार्य कार्यों को न कर पाने की स्थिति में दण्ड तथा प्रायश्चित का भी नियम बनाया जाए अन्यथा बिना भय तथा दण्ड के कोई भी व्यक्ति नियम तथा अनुशासन का पालन नहीं करेगा है।

वैदिक ज्ञान के पुनः प्रचार-प्रसार के लिए यह आवश्यक है कि हम वैदिक सिद्धांतों, विधि-विधानों तथा अनुशासनों का वैज्ञानिक विश्लेषण करें। नई पीढ़ी क्या है और क्यों प्रश्न करने वाली है। यदि उनके समक्ष कार्य उपयोगिता, लाभ, महत्व, आवश्यकता को बुद्धिमत्ता पूर्वक प्रभावशाली ढंग से नहीं रखा जाता है तो वे स्वीकार नहीं करते हैं। चाहे वह व्यायाम हो, यज्ञ, ध्यान हो या जप, स्वाध्याय या सत्संग। जब किसी की बुद्धि में यह अच्छी तरह बैठ जाता है कि यह कार्य मेरे उद्देश्य के लिए परम उपयोगी है तो वह तत्काल उसे स्वीकार कर लेता है अन्यथा नहीं।

आज यदि वैदिक धर्म का विश्व में लोप हुआ है तो इसमें कारण हम ही हैं। हम आर्य यदि यह निश्चय कर लेवें कि हमें अपने ईश्वरीय आदेश का पालन करते हुए विश्व में पुनः चक्रवर्ती अखण्ड एकछत्र वैदिक साम्राज्य की स्थापना करनी है तो यह कार्य असंभव नहीं है। आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की, परस्पर संगठन, निष्ठा, प्रेम, त्याग, तपस्या, अनुशासन तथा बलिदान की। वैदिक धर्म ही ईश्वरीय है और सृष्टि के आदि से महाभारत तक अर्थात् 1 अरब, 96 करोड़, 8 लाख वर्षों तक इस धरती पर आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य बना रहा है और वैदिक परम्परायें चलती रही थी। हमें इस बात को समझना है कि सत्य, आदर्श को जीत या सफलता अपने आप नहीं मिलती बल्कि इसके लिए परम पुरुषार्थ करना पड़ता है। हम यदि ऐसा करेंगे तो सफलता निश्चित है। तन, मन, धन, बुद्धि, संगठन, योजना सब मिलकर सफलता को प्राप्त कराते हैं।

आजकल देश-विदेश में वैदिक जीवन शैली/ परम्परा को जो व्यक्ति अपने जीवन में अपनाये हुए हैं किन्तु उनकी यह परम्परा नई पीढ़ी नहीं अपना रही है इसका मुख्य कारण उनके अभिभावक ही हैं। वे अभिभावक या तो वैदिक ज्ञान की विशेषताओं को स्वयं ही पूर्ण रुणेण जानते नहीं है या फिर वे ठीक प्रकार से उनको समझा नहीं पाते हैं। यदि केवल वैदिक धर्मी माता-पिता मन में दृढ़ संकल्प कर लें कि मुझे अपने पुत्र को किसी भी कीमत पर वैदिकधर्मी बनाना है और इसके लिए पूर्ण प्रयास करें तो यह निश्चित है कि वैदिक धर्म की परम्परा नई पीढ़ी में आ जाती है जैसे कि अन्य अनेक मत, पंथ, सम्प्रदायों में विद्यमान है।

ईश्वर से हामरी प्रार्थना है कि वह हमारे मन में विशेष श्रद्धा, उत्साह, साहस, पराक्रम भर दे कि हम देश-देशान्तर में वैदिक ज्ञान को पुनः प्रचार-प्रसार करने हेतु घोर तपस्या और त्याग के साथ में पूर्ण पुरुषार्थ करें और सम्पूर्ण विश्व में वैदिक धर्म की स्थापना करके 'कृण्वंतो विश्वमार्यम्' का स्वप्न पूरा कर सकें।

-ज्ञानेश्वर आर्य (एम.कॉम) दर्शनाचार्य

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा मेधावी छात्रा अभिनन्दन समारोह

दिनांक 16 जुलाई 2013 को प्रातः 10.30 बजे वैदिक विद्या मंदिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में हर्षोल्लास के साथ मेधावी छात्रा अभिनन्दन समारोह मनाया गया। विद्यालयी छात्रा भूमिका ने वैदिक परम्परानुसार अतिथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया।

समारोह का प्रारम्भ ईश प्रार्थना 'ओ३म् विश्वानि देवाः' से हुआ। भजनोपदेशक भूपेन्द्र आर्य ने अपने भजन 'सूरज बन दूर किया जिसने आँखों का अँधेरा' द्वारा ऋषि दयानन्द के चरित्र का वर्णन किया। आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित आर्य बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर की छात्रा कु. अदिति वशिष्ठ पुत्री श्री तेज प्रकाश वशिष्ठ ने राजस्थान बोर्ड की कला सीनियर सैकण्डरी कक्षा की राज्य की वरीयता सूची में नवाँ स्थान प्राप्त कर अपने परिवार, विद्यालय एवं जिले को गौरवान्वित किया तथा जिले की वरीयता सूची में प्रीति शोखावत, आर्य बा.उ.मा.वि. हसन खाँ मेवाती नगर ने तृतीय स्थान, कु. भारती, आर्य.बा.उ.मा.वि., स्वामी दयानन्द मार्ग ने छठा स्थान, आयशा बानो व जया शर्मा आर्य बा.उ.मा.वि., स्वामी दयानन्द मार्ग ने सातवां स्थान प्राप्त कर तथा वाणिज्य वर्ग में भारती सैनी, आर्य. बा.उ.मा.वि., हसन खाँ मेवाती नगर ने सातवाँ स्थान एवं डोली सैनी, आय.बा.उ.वि., स्वामी दयानन्द मार्ग ने नवाँ स्थान प्राप्त कर गौरव बढ़ाने पर समारोह में मेधावी छात्राओं को सम्मानित करते हुए आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता द्वारा 7150/-रू. का टैबलेट तथा अन्य छात्राओं को 2100-2100 रूपये नकद राशि से पुरस्कृत किया गया। धर्मवीर आर्य द्वारा अदिति वशिष्ठ को राज्य स्तरीय वरीयता सूची में नवाँ स्थान प्राप्त करने पर 1000/- रूपये नकद राशि से पुरस्कृत किया गया।

समिति प्रधान ने बच्चों में आगे के जीवन में दृढ़ इच्छा शक्ति से अध्ययन कर अपना उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए प्रेरित किया। समिति निदेशक श्रीमती कमला शर्मा ने बच्चों को नैतिक व मानवीय मूल्यों का इस्तेमाल कर बच्चों को ऊँचाइयों तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर सर्वश्री अशोक आर्य, प्रदीप आर्य, सुरेश दरगन, सत्यपाल आर्य, प्रद्युम्न गर्ग, डॉ. राजेन्द्र आर्य, अमर मुनि, छबीलदास पावा, वेद प्रकाश शर्मा, कृष्णलाल अदलखा, सुनील कुमार, प्रमोद आर्य, इन्द्रा आर्य, सुमन आर्य, दिविशा आर्य, शशि भार्गव, आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। -कमला शर्मा निदेशक- आर्य कन्या वि. समिति, अलवर

लोभ के माध्यम से संसार की समस्त वस्तुओं को कदाचित् तुम प्राप्त कर भी लो, किन्तु आत्मनिधि की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ ही है।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य

संस्थापक अध्यक्ष, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर
के 93 वें जन्म दिवस के अवसर पर

आर्य समाज, स्वामी दयानंद मार्ग, अलवर के तत्वावधान में जन सहयोग से, विशेष सहयोग
श्री रघुवर दयाल गोयल पूर्व विधायक रामगढ़ व श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति के नेतृत्व में

आठ दिवसीय कार्यक्रम

4 अगस्त से 11 अगस्त 2013 तक निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर स्थानः स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल, अलवर

चिकित्सक

डॉ. देशबन्धु गुप्ता	डॉ. गोपाल गुप्ता	डॉ. डी.सी. शर्मा
मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.)	नेत्र रोग विशेषज्ञ	जिला मात् शिशु एवं स्वास्थ्य अधिकारी (से.नि.)
M. 9414283270	(रविवार केवल 20 रोगी)	M. 9314401780

4 अगस्त 2013, रविवार -	चतुर्थ क्रॉस कन्ट्री दौड़-स्वतंत्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य के 93वें जन्म दिवस के अवसर पर अरावली स्पोर्ट्स अकादमी, अलवर द्वारा। समय- प्रातः 7 बजे, स्थान-प्रतापबंध से बाला किला तक
5 अगस्त 2013, सोमवार -	54वाँ निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर श्री के.एल. गुप्ता एडवोकेट के विशेष सहयोग एवं जनसहयोग से। समय- प्रातः 10.30 बजे से दोप. 1 बजे तक, स्थान- न्यायालय परिसर
6 अगस्त 2013, मंगलवार-	द्वितीय निबन्ध प्रतियोगिता- समय- प्रातः 10.30 बजे , स्थान- आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानंद मार्ग अलवर
7 अगस्त 2013, बुधवार-	तृतीय रंगोली प्रतियोगिता- समय- प्रातः 10.30 बजे , स्थान- आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानंद मार्ग अलवर
8 अगस्त 2013, गुरुवार-	प्रथम पोस्टर प्रतियोगिता- समय- प्रातः 10.30 बजे , स्थान- आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानंद मार्ग अलवर
9 अगस्त 2013, शुक्रवार -	यज्ञ एवं तृतीय सम्मान समारोह आर्य समाज का श्रेष्ठ कार्य करने के लिए ''आर्य शिरोमणि'' उपाधि श्री विद्यासागर शास्त्री पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर को शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा एवं नवनिर्वाचित कार्यकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का अभिनन्दन समय- सायं 4 बजे , स्थान- आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानंद मार्ग अलवर
10 अगस्त 2013, शनिवार-	आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा संचालित उ.मा.विद्यालयों में अध्यनरत प्रतिभाशाली सर्वश्रेष्ठ छात्राओं को षष्ठम पुरस्कार शारदादेवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट व स्व. पं. वाचस्पति शास्त्री मेमोरियल ट्रस्ट दिल्ली द्वारा समय- प्रातः 10.30 बजे , स्थान- आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानंद मार्ग अलवर
11 अगस्त 2013, रविवार-	55वाँ निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर क्योरवेल डायग्नोस्टिक सेन्टर कुलदीप आर्य व जनसहयोग से डॉ. सतीश माथुर थायराइड एवं मधुमेह विशेषज्ञ दिल्ली समय- प्रातः 9.30 बजे से 1.00 बजे तक, स्थान- आर्य समाज, स्वामी दयानंद मार्ग अलवर

विशेष सहयोग- क्योरवेल डायग्नोस्टिक, अलवर द्वारा सभी जाँचें रियायती दरों पर होंगी

नोट- थायराइड की जाँच दिनांक 5,6,7 अगस्त 2013 सेम्पल कलेक्शन श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल में प्रातः 10 से 12 बजे

आपके द्वारा दिये गये दान से किसी की जान बच सकती है।

जन्म दिन, शादी, पुण्यतिथि, त्यौहार, खुशी के मौके आदि पर दिल खोल कर समिति को दान करें।

आयकर की धारा 80 जी की छूट है। समिति का बैंक खाता नं. 06680100013946 बैंक ऑफ बडौदा (मेन), अलवर में है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।